International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 1, Jan.-Feb., 2024, pp: 520-523 www.ijhssm.org

बालक का भाषा विकास : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

Date of Submission: 16-01-2024 Date of Acceptance: 31-01-2024

Abstract (सार)

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है शिशु जन्म के पश्चात् उसके समाज से जुड़ने के माध्यम जैसे भाषा ज्ञान एवं उसके विकास तथा उसके स्तर इत्यादि का किस प्रकार से समायोजन करता है और भाषा के निपुण होकर समाज से जुड़ता है का वर्णन करना है। वैसे तो एक मानव शिशु में भाषा का पहला प्रयोग रूदन क्रिया से आरम्भ होती है।

कुछ शोधों से पता चला है कि सबसे पहले सीखने की शुरूआत गर्भावस्था से ही होती है। जब भ्रूण अपनी माँ की आवाज और भाषण पैटर्न को पहचानना शुरू करता है और जन्म के पश्चात् अन्य ध्वनियों से उसे अलग कर पाने में सक्षम हो जाता है। हालांकि हमारे देश में इसकी बात का उल्लेख महाभारत में भी किया गया था।

वैसे तो भाषा का सबसे बड़ा विकास प्रारम्भिक अवस्था में होता है और जैसे–जैसे बच्चा बड़ा (परिपक्व) होता जाता है भाषा के विकास की दूरी कम होती जाती है। इसके अलावा शिशु के आस–पास का वातावरण काफी हद तक उसके भाषा विकास के सहयोग एवं अवरोध उत्पन्न करते हैं। बालक का भाषा–विकास अनवरत एवं स्वस्थ तरीके से कैसे हो सके इसके लिए उसके स्वास्थ्य, आस–पास का वातावरण, समाज इत्यादि पर पूरा ध्यान देना चाहिए जिससे उनमें एक त्रुटिरहित भाषा का विकास हो सके। इस सन्दर्भ में हम कह सकते हैं कि बालकों मे भाषाओं को सीखने, विकास से संबन्धित और उनके व्यवहारों पर मौलिक शोध कार्य की आवश्यकता है ताकि इन आधारों पर बालकों के भाषिक विकास के प्रतिमानों को ठीक तरह से समझा जा सके।

भूमिका

'भाषा' वह माध्यम है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपनी भावनाओं और विचारों से दूसरे व्यक्ति को अवगत कराता है।

जब एक मानव शिशु जन्म लेता है तब उसे किसी भाषा का ज्ञान नहीं होता वह एक नीरिह प्राणी रहता है जो अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। वह अपनी जरूरतों और आवश्यकताओं के लिए रोकर दूसरों को अवगत कराता है। क्योंकि जन्म के समय उसे सिर्फ रोना ही आता है। मानव जीवन के विकास के लिए भाषा का योगदान सबसे अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में सामजस्य बनाये रखने के लिए भाषा से अवगत होना बहुत ही आवश्यक है और भाषा का विकास भी शिशु में शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास के जैसे ही एक क्रमिक विकास का ही भाग है। भाषा विकास को मानसिक विकास की सबसे उत्तम कसौटी कहा जाता है। शिशुओं का विकास भाषा के बिना शुरू होता है और फिर धीरे–धीरे भाषा सीखने की साधारण क्रियाओं से होते हुए आगे बढ़ता जाता है उदाहरणार्थ शिशु जब जन्म लेता है तो उसे किसी भाषा ज्ञान नहीं होता है किन्तु वह मात्र 10 महीने में बोली गयी बातों को अन्य ध्वनियों से अलग करने में सक्षम हो जाता है और इन सब का ज्ञान उसे परिवार से मिलता है अतः परिवार से बालक को सर्वप्रथम भाषा ज्ञान प्राप्त होता है। जिसमें नयी बातों को सीखना और उसके पश्चात् उन बातों का परिष्करण भी करना होता है।

भाषा विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिशुओं में सुनकर भाषा को समझने (श्रवण शक्ति) को तथा उनमें सार्थक ढंग से आवाज निकालकर भाषा बोलने की शक्ति दोनों ही विकसित हो।

शिशु के जीवन के प्रथम पाँच वर्ष भाषा विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण होते हैं, हालांकि वे बचपन के बाकी हिस्सों में और किशोरावस्था में विकसित होते रहते हैं। यद्यपि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से भाषा कौशल विकसित करता है। ये कौशल बच्चों को अन्य लोगों के साथ जुड़ने और कक्षा से सीखने में सक्षम बनाते हैं।

अतः भाषा विकास का पूर्व रूप वाक्शक्ति का विकास है।

भाषा विकास का अर्थ

भाषा विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भावों, विचारों तथा इच्छाओं को एक दूसरे से अवगत कराता है।

हरलॉक कहते हैं कि ''भाषा दूसरों के साथ विचारों का आदान प्रदान करने (बातचीत करने) की योग्यता है।''

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 1, Jan.-Feb., 2024, pp: 520-523 www.ijhssm.org

विकास के किसी भी अन्य पहलू से अधिक, भाषा का विकास मस्तिष्क की वृद्धि और परिपक्वता को दर्शाता है।

कार्ल सी गैरिसन के अनुसार– ''स्कूल जाने से पूर्व बालकों में भाषा ज्ञान का विकास उनके बौद्धिक विकास की सबसे अच्छी कसौटी है।''

यद्यपि रोना बच्चे के जन्म के समय संचार का प्राथमिक साधन है, परन्तु भाषा तुरन्त पुनरावृत्ति और नकल के माध्यम से विकसित होने लगती है।

भाषा विकास के चरण

भाषा विकास को मोटे तौर पर दो चरणों में बाँटकर व्याख्या की गई है– 1. प्राक्भाषा विकास की अवस्थाएँ, 2. उत्तरकालीन भाषा विकास की अवस्थाएँ।

1. प्राक्भाषा विकास की अवस्थाएँ

सामान्यतः शिशु के जन्म से प्रथम पन्द्रह महिनों की अवस्था को प्राक्भाषा की अवस्था मानी जाती है। जिस अवस्था में शिशु अपनी संचार आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति निम्नलिखित प्रकार से करता है–

(i) **रूदन–** हरलॉक का कथन है कि– ''बोलना एक लम्बी और जटिल प्रक्रिया है।'' अतः इसे सीखना भी एक लम्बी प्रक्रिया ही है। प्रारम्भिक अवस्था में शिशु सिर्फ रूदन करता है जो अकारण भी होता है तथा जो एक स्वाभाविक प्रक्रिया भी है। स्टीवर्ट के अनुसार जीवन के प्रारम्भिक दिनों में शिशु रूदन भिन्न मात्रा में पाया जाता है। तीसरे, चौथे सप्ताह में रोने का कारण भूख, पीड़ा या तेज आवाज होती है। चौथे महिने तक रोने के अर्थ में बदलाव होता है और अब वह खेलना चाहता है। पाँचवें महिने में अगर उस पर ध्यान न दया जाए तब भी वह रोने लगता है, दसवें महिने तक वह भय एवं गलत ढंग से गोद लेने पर वह रोने लगता है और इसी अवस्था से भाषाविद् शिशुओं की भाषा विकास की यात्रा का आरम्भ मानते हैं।

(ii) **अस्पष्ट ध्वनियाँ–** अस्पष्ट ध्वनियाँ या बलबलाना भाषा विकास की दूसरी अवस्था मानी गयी है जिस में शिशुओं के तीसरे और बारहवें मास के बीच का समय रखा गया है। यह ध्वनियाँ चौथे, पाँचवें मास के पश्चात् स्पष्ट होना प्रारम्भ हो जाती है। बलबलाने में जीवन के प्रथम वर्ष में स्वर ध्वनि सुनाई देती है जैसे– माँ, दा, बा, ना इत्यादि और एक वर्ष के पश्चात् यही ध्वनियाँ शब्द रूप ले लेती हैं। यह बलबलाना किसी वस्तु विशेष व्यक्ति से सम्बन्धित नहीं होता है। इसलिए हरलॉक ने कहा है, ''यह वास्तविक भाषा नहीं है, बलबलाना खेल भाषा का एक रूप है।''

(iii) **हाव–भाव–** हाव–भाव से अर्थ है, शरीर के अंगों द्वारा की गयी वैसी क्रियाओं से लिया जाता है जिसके कुछ अर्थ निकलते हो फलतः वे भाषा के पूरक रूप माने जाते हैं। जरसील्ड मैकाथ्री ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया है कि इसके माध्यम से शिशु दूसरे को अपने भाव विचार समझाता है। सामान्य रूप से शैशवावस्था में संकेतों के ये रूप दिखाई देते हैं। इसे लेरिक ने संपूर्ण शरीर की भाषा भी माना है।

(iv) **सांवेगिक अभिव्यक्ति–** इसे प्राक् भाषा प्रयोग की अन्तिम अवस्था मानी जाती है। इसमें शिशु आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सांवेगिक अभिव्यक्ति के द्वारा करता है। 12–13 महिने के शिशुओं में इस तरह की सांवेगिक अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

2. उत्तर कालीन भाषा विकास की अवस्थाएँ

शिशुओं में उत्तरकालीन भाषा विकास की पाँच अवस्थाओं का वर्णन किया गया जिससे होकर उनमें भाषा विकास होता है वो अग्रलिखित है–

(i) **दूसरों की भाषा को समझना–** यह उत्तरकालीन भाषा विकास की सबसे पहली अवस्था है जिस में शिशुओं को दूसरों की भाषा को समझना होता है। जिसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह शब्दों को सही–सही समझकर उसका सही उच्चारण भी करें।

(ii) **शब्दावली का निर्माण करना–** उत्तरकालीन भाषा विकास का दूसरा महत्वपूर्ण चरण शब्दावली निर्माण करना है जिसके अन्तर्गत बालकों को शब्दों तथा उनके अर्थ को समझना आवश्यक होता है। जैसे–जैसे बालक नए–नए शब्दों को सीखता है तथा पुराने शब्दों के लिए नए–नए अर्थ समझता है। 18 महिने का बच्चा औसतन 10 शब्दों 12 महिने का बच्चा औसतन 29 शब्दों तथा दो वर्ष का बालक का औसतन शब्दकोश 200–300 शब्दों का होता है और इस प्रकार स्कूल जाने वाले बालक के शब्दकोष में और अधिक वृद्धि हो जाती है।

(iii) **शब्दों का वाक्यों में संगठन–** 2 साल का बालक शब्दों से वाक्यों को बनाने का प्रथम प्रयास करने लगता। 2½ वर्ष की उम्र में बच्चा एक छोटा वाक्य बनाने की कोशिश

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 1, Jan.-Feb., 2024, pp: 520-523 www.ijhssm.org

करने लगता है, जिसको पूरा नहीं बना पाता है, किन्तु 5 वर्ष का बच्चा संज्ञा और क्रिया शब्दों को मिलाकर (छोटे–छोटे वाक्यों को) बोलने लगता है।

(iv) **उच्चारण–** बच्चा अनुकरण द्वारा ही शब्दों का सही–सही उच्चारण करना सीखता है जिसमें वह अपने परिवार एवं आस–पड़ोस के द्वारा बोली गयी भाषा को ध्यानपूर्वक सुनता है। जिसके पश्चात् उनका अनुकरण करते हुए बोलने का प्रयास करता है।

(v) **भाषा–विकास का स्वामित्व–** उत्तरकालीन भाषा विकास की अन्तिम सीढ़ी मानी गयी है। जिसमें व्यक्ति को शब्दों एवं वाक्यों का सही–सही प्रयोग भाषा के व्याकरण तथा भाषा के वाक्य विन्यास आदि का अच्छा ज्ञान हो जाता है और अब तक उसे लिखित तथा मौखिक भाषा पर काफी हद तक नियंत्रण हो जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों के अन्तर्गत विभिन्न चरणों से भाषा का विकास निरंतर होता रहता है यद्यपि विकास की गति में अवस्थाओं के अनुसार अन्तर पाया जाता है।

भाषा विकास का क्रम

शिशुओं में भाषा का विकास एक क्रमबद्ध तरीके से होता है, जो अग्रलिखित है–

1. ध्वनि की पहचान

शिशुओं का रोना ही उनकी सबसे पहली भाषा होती है और उनमें भाषा विकास का सबसे पहला चरण ध्वनि की पहचान करना होता है जिसके अन्तर्गत शिशु 6–7 महिने की उम्र से ध्वनि की पहचान करना प्रारम्भ कर देते हैं।

2. ध्वनि उत्पन्न करना

25 सप्ताह का शिशु ध्वनि को पहचान कर उससे सम्बन्धित कुछ अन्य ध्वनियों को उत्पन्न करना आरम्भ कर देता है जिसमें स्वरों की संख्या अधिक होती है। जैसे– 8–9 महिने का बालक ताली बजाने या कुछ बोलने पर स्वयं ध्वनि करने की कोशिश करना प्रारम्भ कर देता है।

3. शब्द एवं वाक्यों का निर्माण

दो वर्ष का बालक स्पष्ट रूप से शब्द बोलना प्रारम्भ कर देता है तथा ढ़ाई तीन वर्ष का बालक शब्दों को मिलाकर वाक्य बोलना प्रारम्भ कर देता है।

4. लिखित भाषा का प्रयोग

4–4½ वर्ष का बालक शब्दों एवं वाक्यों को बोलने के साथ–साथ लिखने भी लगता है।

5. भाषा विकास की पूर्णावस्था

इस अवस्था में भाषा बोलने, लिखने तथा पढ़ने की पूर्ण शक्ति विकसित हो जाती है। जिन बालकों में इन तीनों तरह की शक्तियों का जितना ही अधिक विकास होता है, उसमें भाषा का विकास उतनी ही तीव्रता से होता है।

भाषा विकास

शिशुओं का बात करना सीखना बचपन की एक दर्शनीय और महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है उनमें यह विकास एक क्रमके अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में होता रहता है। कभी इसकी गति तेज हो जाती है, तो कभी इसकी गति तुलनात्मक रूप से मंद हो जाती है जिसके अनेकों कारक प्रभावित करते हैं जो अग्रलिखित हैं–

1. स्वास्थ्य

स्मिथ के अनुसार ''लम्बी बीमारी (विशेष रूप से पहले दो वर्ष में) के कारण बालक भाषा विकास में दो मास के लिए पिछड़ जाते हैं।'' इसका कारण है भाषा की संपर्क जन्यता।

बालक भाषा के अनुकरण के माध्यम से सीखता है, स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उसे अनुकरण के अवसर कम मिलते हैं।

2. बुद्धि

मनोवैज्ञानिक दर्शन का कहना है कि– ''बुद्धि तथा भाषा का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। भाषा के स्तर से ही बुद्धि का पता चलता है। यह बात बाल्यावस्था पर वाक् के शब्द भण्डार में वृद्धि के कारण प्रकट होती रहती है।''

कई अन्य अध्ययनों में यह पाया गया है कि शिशुओं के प्रथम दो वर्षों में भाषा तथा बुद्धि का सह सम्बन्ध अधिक होता है।

3. सामाजिक और आर्थिक दशा

विभिन्न अनुसंधानों में यह पाया गया है कि जिन परिवारों का सामाजिक आर्थिक स्तर नीचा होता है वहाँ पर बालकों की भाषा का विकास काफी धीमे–धीमे गति से होता है। उन बालकों को दूसरों के सम्पर्क में आने का अवसर कम ही मिलता है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 1, Jan.-Feb., 2024, pp: 520-523 www.ijhssm.org

4. लिंगभेद

शिशुओं में यौन भिन्नता दो वर्ष की आयु से आरम्भ हो जाती है। अध्ययनों से यह पता चलता है कि लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा शीघ्र ही ध्वनि संकेत ग्रहण करती हैं और प्रायः यह भी देखा गया है कि वाणी दोष लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में अधिक पाया जाता है।

5. परिवार का आकार

भाषा सीखने में परिवार और उसके सदस्यों का भी काफी हद तक महत्व रखते है। क्योंकि शिशु अपने से बड़ा एवं परिवार के अन्य बच्चों के सम्पर्क से भी अपनी भाषा का विकास करते हैं।

6. साथियों के साथ सम्बन्ध

एक बच्चे का समय सबसे ज्यादा खेल और अपने दोस्तों के साथ ज्यादा बिताता है और ये सब उसके भाषा के विकास को भी प्रभावित करता है। इसलिए बच्चे को अच्छे साथियों के बीच रखने का प्रयास करना चाहिए।

7. विद्यालय और शिक्षक

एक शिक्षक का बालक के भाषा विकास में काफी महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है क्योंकि यदि विद्यालय का शिक्षक भाषा के प्रयोग में निपुण हो, भाषा का उच्चारण सही हो तो उस विद्यालय के बालक का भाषा विकास बेहतर होगा।

निष्कर्ष

जर्मन विद्वान मैक्समूलर का कहना है कि– ''भाषा और कुछ नहीं केवल मानव के मन की चतुर बुद्धि द्वारा अविष्कृत एक ऐसा उपाय है जिसकी मदद से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं, और जो चाहते है कि इसकी व्याख्या प्रकृति की उपज के रूप में नहीं, बल्कि मानवकृत पदार्थ के रूप में करना उचित है।''

भाषा मानव जीवन के अव्यक्त व्यक्तित्व का व्यक्त रूपायन है। साध्य रूप में यह सार्वभौम चेतन प्रक्रिया के माध्यम से सम्पूर्ण ज्ञान विधाओं के रूप में व्यक्त और अव्यक्त सीमाओं का एक विधान माना जाता है। भाषिक विकास प्रक्रिया एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया मानी गयी है जिसमें अनेक प्रकार की क्रियायें तथा प्रक्रियायें सम्मिलित हैं।

सन्दर्भ

(Web Reference Index)

1. www.child-encyclopedia.com/language-development and literacy
2. www.news-medical.net/health/Language-Development-in-Children.aspx
3. http://www.scotbuzz.org
4. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Language-development.
5. https://www.papermasters.com/language-development-children.html

Book Reference Index

1. सिंह, अरूण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, पटना (भारती भवन)
2. डॉ0 पाल गुप्त एवं मदन मोहन, शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद (न्यू कैलाश प्रकाशन, 2006–2007)
3. डॉ0 सारस्वत, मालती, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन
4. श्रीवास्तव, डी0एस0सिंह, योगेश कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान युनिवर्सिटी पब्लिकेशन।